महर्षि दयानंद सरस्वती के शैक्षिक एवं सामाजिक विचारों का एक तात्विक विश्लेषण

प्रो. चंदना डे
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग
ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,लखनऊ

रजनी कांत दीक्षित
शोध छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्विद्यालय, लखनऊ

सार

महर्षि दयानंद एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद एवं एक समाज सुधारक थे। उनका सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की स्थापना करना था जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में एक क्रांति की शुरुआत की । महर्षि दयानंद सरस्वती को भारत के सबसे महत्वपूर्ण सुधारक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। दयानंद सरस्वती के दर्शन को उनकी तीन प्रसिद्ध पुस्तकों सत्यार्थ प्रकाश, "वेद भाष्य भूमिका" और 'वेद भाष्य' से भी जाना जा सकता है। महर्षि दयानंद आर्य समाज के महान संस्थापक हैं, जो आधुनिक भारत की शिक्षा प्रणाली के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं। जब भारत के शिक्षित युवा यूरोपीय सभ्यता का अनुसरण करने में लगे थे और भारतीय लोगों की प्रतिभा और संस्कृति पर कोई ध्यान दिए बिना भारत में इंग्लैंड के शैक्षिक विचारों को प्रसारित करने के लिए आंदोलन कर रहे थे तब महर्षि दयानंद ने साहसपूर्वक पश्चिम के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक वर्चस्व का विरोध किया। वे सामाजिक बुराइयों जैसे मूर्तिपूजा, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, भाग्यवाद, अनैतिकता, दहेजप्रथा आदि के खिलाफ थे। उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता और शोषित वर्ग की प्रगति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। वेदों और हिंदुओं के वर्चस्व को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म का विरोध किया और अन्य संप्रदायों को हिंदू व्यवस्था में वापस लाने के लिए शुद्धि आंदोलन की वकालत की।

बीज शब्द- शिक्षा, संस्कृति, आर्य समाज, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, राष्ट्रवाद, शुद्धि आन्दोलन

१. प्रस्तावना

महर्षि दयानंद एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक और एक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी भी थे। उनका सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की नींव थी जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में एक नए जनान्दोलन को जन्म दिया । उन्हें भारत में सबसे महत्वपूर्ण सुधारक और आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता है। दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व में आर्य समाज आंदोलन का प्रतिबिंब दिखाई देता है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सराहनीय है। डॉ. एस. राधाकृष्ण के अनुसार, "आधुनिक भारत के निर्माताओं में जिन्होंने लोगों के आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और देशभक्ति की आग को जलाया है, मुझे उनमें महर्षि दयानंद का स्थान सर्वोपरि प्रतीत होता है।"

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती : प्रारंभिक जीवन, आर्य समाज एवं सामाजिक सुधार

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के भूतपूर्व मोरवी राज्य के टकारा गाँव में 12 फरवरी 1824 को हुआ था। मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण इनका नाम मूलशंकर रखा गया।इनके पिता का नाम अम्बाशंकर था। दयानंद बचपन से ही बड़े मेधावी और होनहार थे। इन्होंने बचपन मे ही अपने पिता की देखरेख में वेद, संस्कृत व्याकरण और संस्कृत भाषा में दक्षता हासिल की थी। बचपन से ही मूलशंकर का जीवन भी अन्य बच्चों की तरह था लेकिन उनके जीवन की एक घटना के बाद इनकी जीवन शैली बदल गई। जब वे चौदह वर्ष के थे, तो उन्होंने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ शिवरात्रि के दिन उपवास रखा। संभवत: परिवार के अन्य सदस्य शिव की पूजा करने के बाद सोने लगे लेकिन उन्होंने एक चूहे को शिवलिंग पर चढकर प्रसाद खाते देखा तो उनका मूर्तिपूजा से विश्वास उठ गया। इस घटना ने उन्हें यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि शिव की मूर्ति वास्तविक भगवान नहीं हो सकती है। जब मूर्ति उसके लिए दी गई भेंट की रक्षा नहीं कर सकती थी, तो वह कभी भी पूरी दुनिया की रक्षा नहीं कर सकती है । इस अनुभव ने उनकी अंतरात्मा को जगा दिया और मूलशंकर हिंदू धर्म के आडंबरो के खिलाफ एक कट्टर योद्धा बन गए। उनके पिता ने उन्हें वैवाहिक जीवन में बांधकर उनका मन सांसारिक जीवन मे लगाने की कोशिश की किन्तु वह पारिवारिक जीवन के बंधन में बंधने को तैयार नही हुए । सन 1861 में, वह स्वामी बृजानंद के संपर्क में मथुरा आए। यह संपर्क उनके जीवन में निर्णायक बिंदु सिद्ध हुआ। वह स्वामी बृजानंद शिष्य बने और प्राचीन धार्मिक साहित्य, विभिन्न पौराणिक पुस्तकों और संस्कृत व्याकरण पाठ का अध्ययन किया। मथुरा में उनकी दार्शनिक विचारो ने ठोस रूप ले लिया और उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब मूलशंकर दयानंद सरस्वती बन गए और अपने गुरु के निर्देश से वेदो के संदेश को जनमानस तक फैलाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने रूढ़िवादी हिंदू धर्म और गलत परंपराओं के खिलाफ लड़ने के लिए हालांकि ब्रह्म समाज से संपर्क किया, किंतु वे इसके वर्चस्व को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अतः अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्होंने 10 अप्रैल, 1875 को बॉम्बे में आर्य समाज की स्थापना की और शेष सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की शिक्षाओं को जनमानस तक पहुचाने के लिए समर्पित कर दिया। 30 अक्टूबर, 1883 को खाद्य विषाक्तता से उनकी मृत्यु हो गई।

३. शैक्षिक विचारों के मूल तत्व

महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन को उनके तीन प्रसिद्ध रचनाओ अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश ","वेद भाष्य भूमिका "और" वेद भाष्य "से जाना जा सकता है। उनके द्वारा संपादित "आर्य पत्रिका" भी उनके विचार को दर्शाती है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के दो समुल्लासों (2 और 3) को "शिशुओं के साथ-साथ किशोरों के लिए शिक्षा के लिए समर्पित किया है। एक कुशल लेखक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने के अतिरिक्त उपरोक्त कार्य एक शैक्षिक और धार्मिक सुधारक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती वर्तमान शिक्षा प्रणाली की भी आलोचना करते हुये कहते है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षा के मौलिक उद्देश्यों को पूरा करने में असफल रही है । उनका मानना है कि एक शिक्षित व्यक्ति को विनम्र, ऊर्जावान, माता-पिता, शिक्षकों के प्रति सम्मानजनक एवं अच्छे चरित्र को धारण करना चाहिए। उसे वाणी और मन पर नियंत्रण रखना चाहिए। उन्होंने अपनी पत्रिका "व्यवहारभानु" में एक पंडित विद्वान व्यक्ति के गुणों को चित्रित किया है जो बालको की शिक्षा का समर्थक है और इसके विपरीत एक मूर्ख व्यक्ति के चरित्र का वर्णन किया है जिसे बालको की शिक्षा के

प्रति उदाशीनता दर्शाता है। दयानंद तीन चार विषयों के ज्ञान मात्र के समर्थक नही थे जो की वर्तमान शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है उन्होंने विषयो की ऐसी संरचना प्रस्तुत की जिसमे व्याकरण, साहित्य के साथ विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है यथा वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और आयुर्वेद, स्वास्थ्य का विज्ञान: धनुर्वेद, युद्ध का विज्ञान, गंधर्ववेद, सौंदर्य कला, अर्थवेद, व्यावसायिक प्रशिक्षण, खगोल विज्ञान, बीजगणित, अंकगणित, भूविज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान आदि विषयों का ज्ञान बालको को बहमुखी व्यक्तित्व प्रदान कर सकता है। शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में उनके विचार भिन्न हैं। वे एक ओर जहां वैदिक साहित्य के अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा के ज्ञान को आवश्यक मानते है वही दूसरी ओर उनका मानना था की अपने विचारों को जनमानस तक पहुचाने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है इसलिए अभिव्यक्ति की भाषा वह होनी चाहिए जो जनमानस की भाषा हो इसलिए उन्होंने अपनी आरंभिक रचनाये संस्कृत भाषा मे लिखी किन्तु बाद में जनमानस तक पहुँच के लिए हिंदी को भाषा के माध्यम के रूप में चुना। उनके लिए वेद हिंदू संस्कृति की चट्टान है और अचूक है, जो ईश्वर की प्रेरणा है। उन्होंने हिन्दू संस्कृति को पाखंड से मुक्त करने और उसे तर्कसंगत आधार प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने वेदों के ओर लौटो का नारा दिया। हिंदू धर्म की लड़ाई की भावना को मजबूत करने के लिए उनका दृष्टिकोण सुधारवादी था।

४. जन मानस के उत्थान के लिए किए गए शैक्षिक सुधार एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता

महाऋषि दयानंद ने गुरुकुलो एवं वैदिक विद्यालयों की स्थापना करके शैक्षिक सुधार करने की ओर अपना पहला प्रयत्न किया। ये गुरुकुल छात्रों के लिए वैदिक मूल्यों और संस्कृति पर अत्यधिक केंद्रित थे। इस पहल ने स्वामी के सामाजिक सुधारों के दृष्टिकोण के पहले व्यावहारिक अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व किया। मूर्ति पूजा के स्थान पर छात्रों को 'संध्या' (स्वाध्याय: की अवधारणा के साथ पेश किया गया, यहाँ, प्रत्येक शाम को छात्र एक समूह बनाकर अपने दैनिक विचार साझा करते है)। इसने भारत में वैदिक संस्कृति के संदर्भ में एक सामाजिक उत्थान की शुरुआत की। स्वामी जी इन गुरुकुलों के माध्यम से जातिगत ऊँच नीच को खत्म करना चाहते थे और शिक्षा के माध्यम से जनता का उत्थान करना चाहते थे।

गुरुकुलों, बालिका गुरुकुलों और डीएवी कॉलेजों की स्थापना करना शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान था। इस उद्देश्य के लिए आर्य समाज ने पूरे भारत में बहुत सारे शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की, विशेष रूप से भारत के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, और हरिद्वार में गुरुकुल अकादमी का गठन आर्य समाज के सदस्यों की बहुत सख्त उत्सुकता को दर्शाता है। हिंदू शिक्षा के प्राचीन आदर्श और परंपराओं को पुनर्जीवित करने का कार्य वर्तमान समय मे भी इन्ही शिक्षण संस्थानों के द्वारा किया जा रहा है।

स्वामी दयानंद के शैक्षिक दर्शन के बारे में संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उनकी शिक्षा की योजना इसके रचनात्मक, व्यापक चरित्र को प्रकाश में लाती है । वे इस बात पर बल प्रदान करते है कि शिक्षा के माध्यम से ही जनमानस का उत्थान और समाज का उत्थान संभव था। मनुष्य में गरिमा का भाव तब उगता है जब वह अपने भीतर की भावना के प्रति सचेत हो जाता है और यही शिक्षा का उद्देश्य है। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के माध्यम से लाए गए नए मूल्यों के साथ भारत के पारंपरिक मूल्यों में सामंजस्य लाने का प्रयत्न किया है। अपनी शिक्षा योजना के माध्यम से वह जाति,

धर्म, राष्ट्रीयता या समय की चिंता किए बिना मानवता के नैतिक और आध्यात्मिक कल्याण और उत्थान को मूर्त रूप देने का प्रयास करते हैं।

५. सामाजिक विचार

महर्षि दयानंद मूर्ति पूजा, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, भाग्यवाद, शिशु हत्या, दहेज प्रथा आदि के पुरजोर विरोधी थे। वे महिलाओं की मुक्ति और वंचित वर्ग के उत्थान के लिए खड़े हुए थे। वेदों और हिंदुओं के वर्चस्व को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म का विरोध किया और शुद्धि आंदोलन की वकालत करते हुए अन्य संप्रदायों को हिंदू धर्म में फिर से अपनाने की वकालत की। स्वामी दयानंद सरस्वती का यह मानना था कि वैदिक शिक्षा के प्रसार के माध्यम से भारतीय समाज के उत्थान का आग्रह पूरा हो सकता है।

उन्होंने सबसे पहले लोगों से आग्रह किया था कि वे भारत में निर्मित केवल स्वदेशी चीजों का इस्तेमाल करें और विदेशी चीजों को त्यागें। उन्होंने सबसे पहले हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में पहचाना था। दयानंद सरस्वती लोकतंत्र और स्वशासन के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने घोषणा कि स्वशासन का कोई विकल्प नहीं है।

उन्होंने ग्रामीण भारत के उत्थान पर अत्यधिक ध्यान दिया। कई अर्थो में दयानंद ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में महात्मा गांधी के विचारों का अनुसरण किया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का गठन लोकतांत्रिक चुनाव की प्रक्रिया के माध्यम से किया गया था। स्वामी दयानंद ने एक रचनात्मक मंच का प्रतिनिधित्व किया और हिंदू समाज में पूर्ण फेरबदल के अपने दृष्टिकोण के साथ भविष्य के विकास का उद्घाटन किया।

महर्षि दयानंद का एक संवेदनशील और दयालु हृदय समाज सुधारक के रूप में जाने जाते है जो शोषित वर्ग के दुख-दर्द को स्वयं अनुभव करते थे। 'परमेश्वर की रचना से प्रेम करना स्वयं परमेश्वर से प्रेम करना है' - इसलिए उन्होंने लोगों को यह सिखाया है। लोगों को निद्रा से जगाने के लिए स्वामीजी ने पूरे भारत की यात्रा की, उन्होंने जाति व्यवस्था, मूर्ति पूजा, बाल विवाह और अन्य विकृत रीति-रिवाजों और परंपराओं की कटु आलोचना की। उन्होंने उपदेश दिया कि महिलाओं को पुरुषों के साथ समान अधिकार होने चाहिए और जीवन में शुद्ध आचरण पर जोर देना चाहिए। समय बीतने के साथ कुछ अंध रीति-रिवाज हिंदू धर्म में आ गए थे। इन रीति-रिवाज ने प्रमुखता से समाज को अपने चंगुल में बांध रखा था और इसलिए हिंदू धर्म की वास्तविक शक्ति और महानता मंद हो गई थी। स्वामी दयानंद की शिक्षाओं के साथ सच्चा हिंदू धर्म आगे चमकने लगा। हजारों युवा जो पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित थे और ईसाई धर्म को स्वीकार करने वाले थे, वे पुनः वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी बन गए। कालांतर में दूसरे धर्मों में गए हिंदुओं ने पुनः वापस आने की इच्छा जताई। इसके लिए स्वामी जी ने शुद्धि आंदोलन से द्वारा वैदिक धर्म को संवर्धित करने का कार्य किया। उन्होंने महिलाओं की समानता पर विशेष जोर दिया। वह कहते थे कि महिलायों की स्थिति इतनी दयनीय हो गई है की इसमें सुधार करने की नितांत आवश्यकता है। महिलाओं को शिक्षा नहीं दी जाती बल्कि उन्हें अज्ञानता में रखा जाता था। वे महिलायों के पर्दा प्रथा के कट्टर विरोधी थे उनका मानना था कि जब तक महिलाओ को मुक्त वातावरण नही दिया जाएगा तब तक उनकी प्रगति नही हो सकती है।

६. सामाजिक सुधारों के संदर्भ में दयानंद के विचारों की वर्तमान उपयोगिता

स्वतंत्र भारत में सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन लाने में स्वामी दयानंद के विचारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि दयानंद की आलोचना एक रूढ़िवादी और संप्रदायवादी विचारक के रूप में की गई थी, जिन्होंने अन्य सभी धर्मों के ऊपर और ऊपर हिंदू धर्म की श्रेष्ठता का दावा किया था, फिर भी वे आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे। सही अर्थो में, वे ईसाई धर्म या इस्लाम के विरोध में नहीं थे, बल्कि सभी धर्मों की बुरी प्रथाओं और उनके धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध थे।

विभिन्न सामाजिक बुराइयों के विरोध के साथ, स्वामी दयानंद ने हिंदू समाज के उत्थान के लिए अथक प्रयत्न किए । उन्होंने समाज में जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का विरोध किया। उन्होंने वेदों को पढ़ने के लिए ब्राह्मणों के एकाधिकार को भी चुनौती दी और वेदों के अध्ययन के लिए जाति, पंथ और रंग के हर व्यक्ति के अधिकार का समर्थन किया। दयानंद ने भी अस्पृश्यता की प्रथा का विरोध किया। उनके ये सभी विचार वर्तमान समय मे भी अत्यंत उपयोगी है।

७. निष्कर्ष

स्वामी दयानंद सरस्वती उन सबसे महत्वपूर्ण सुधारकों में से एक हैं जिन्हें भारत में आध्यात्मिक शक्तियों के रूप में जाना गया है । दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व आर्य समाज आंदोलन के पौरुष के रूप में एवं इसके लगभग हर एक अनुयायियों में असाधारण रूप से प्रतिबिंबित होता है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सराहनीय है। विशेष रूप से भारत के उत्तरी और पूर्वी भागों में शिक्षा संस्थानों की स्थापना और हरिद्वार में गुरुकुल अकादमी का गठन हिंदू शिक्षा के प्राचीन आदर्श और परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए कई समाजवादियों की अत्यंत उत्सुकता का उदाहरण है । आर्य समाज आंदोलन के सदस्य देश की अन्य जन सेवाओं में भी आगे हैं। स्वामी दयानंद का योगदान और महत्व देश में तब तक जीवित रहेगा जब तक आर्य समाज मौजूद रहेगा और धार्मिक और सामाजिक सुधारों की अपनी गतिविधियां जारी रखेगा।

संदर्भ ग्रंथ

१. भारतीय, भवानीलाल (२०००), दयानंद का व्यक्तित्व, विचार एवं मूल्यांकन, जोधपुर : दयानद अध्ययन संस्थान

२. दत्त, लक्ष्मी (१९९९), दयानंदीय शिक्षा पद्धति, गुजरात : विभूमि प्रकाशन केंद्र

३. दयानंद सरस्वती (१९९७), व्यवहारभानु, अजमेर : वैदिक पुस्तकालय

४. स्वामी दयानंद सरस्वती गैर- आर्य समाजवादियों के द्रष्टिकोण में, १९९०

५. स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन-वृत १९८७

६.पाल, विजेंद्र (१९८४), भारतीय राष्ट्रवाद एवं आर्य समाज आंदोलन, नई दिल्ली : विभूमि प्रकाशन

७. चौबे, एस. पी. (१९५७), भारत के कुछ महान शिक्षाशात्री, आगरा : आगरा प्रकाशन केंद्र

८. दयाल, भगवान (१९५५), आधुनिक शिक्षा का विकास, बॉम्बे

९. धर्म देव भारती: आर्य समाज का इतिहास